IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ऐतिहासिक शोध के चरण –

डॉ. शीतल कुमारी

इतिहास अतीत की घटनाओं का केवलसामयिक व्यवस्थापन ही नहीं है अपितु यह अतीत की समाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक शक्तियो का एकीकृत विवरण है। एक इतिहास वेता के अनुसार "इतिहास अतीत की विविध घटनाओं के सन्दर्भ में वर्तमान को समझने तथा भविष्य के लिए अनुमान लगाने का प्रक्रम है ।"

वर्तमान की प्रत्येक स्थिति अपने अतीत पर आश्रित होती है । इसलिए वर्तमान की किसी घटना को समझना चाहेगे तो हमें उसके अतीत में झांकना होगा । इस प्रकार इतिहास ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में अतीत की घटनाओं का ऐसा एकीकृत वर्णन है जो वर्तमान को समझने में तथा भविष्य के लिए पूर्वकथन करने में सहायता देता है।

ऐतिहासिक अनुसंधान का आश्रय स्पष्ट करते हुए बेस्ट लिखते है- "ऐतिहासिक अनुसंधान

ऐतिहासिक समस्याओं को जानने के लिए वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग है इसके अन्तर्गत समस्या की पहचान तथा परिसीमतन, जांच, प्रदतो का विश्लेषण, – सगंठन, सत्यापन, वैधता, निर्धारण, परिकल्पना, परीक्षणसा तथा ऐतिहासिक घटनाओं का लेखन शामिल है । यसह सब अतीत के संबंध में नया शोध प्रदान करती है। जिनका संबंध वर्तमान तथा भूत से होता है।

जबकि करलिंगर ने ऐतिहासिक अनुसंधान के संबंध में लिखा :- ऐतिहासिक अनुसंधान अतीत की घटनाओं, विकासों तथा अनुभवों की समालोचनात्मक जाँच है जो सावधानी पूर्वक तथा वैधता के साथ प्रमाणों को महत्व देती हुई समुचित साक्ष्यों पर आधारित होती है। इसके बाद अन्य शोधकर्ता के समान ही ऐतिहासिक शोधकर्ता भी पत संकलन करता है, प्रदतों की वैधता हेतु उनकी जाँच करता है तथा प्रदतों की विवेचना करता है।"

ऐतिहासिक अनुसंधान जैसा कि ट्रेवर्स लिखते है का मुख्य संबंध मानव की अतीत तथा उनके पुर्ननिर्माण से है । कोई भी इतिहासवेता' अतीत के पुर्ननिर्माण के अभाव में भविष्य के विषय में नहीं सोच सकता है। एतिहासिक खोजकर्ता खोजकर्त्ता अतीत के घटनाक्रमों तथ्यों तथा अभिवृतियों के वैज्ञानिक की वर्तमान

के अध्यन आधार पर समस्याओं पर चिन्तन तथा उनका विश्लेषण कर भविष्य के लिए विकास की दिशा खोजता है इन्ही तथ्यों को छिटनी कुछ इस प्रकार व्यक्त करते है-

उपयुक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर अब हम ऐतिहासिक अनुसंधसान की विशेषता को इस प्रकार स्पष्ट कर सकते है-

1ण ऐतिहासिक अनुसंधान अतीत की घटनाओंए विचारों और किए गये कार्यो का वैज्ञानिक अध्यन करता है।

2ण ऐतिहासिक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य अतीत के अध्यन के आधार पर वर्तमान को समझना

तथा उसकी सस्याओं की खोज करना तथा भविष्य के लिए पूर्व करना है।

3ए ऐतिहासिक अनुसंधान भी अन्य अनुसंधान की भांति परिकल्पनाओं प्रदतोए साक्ष्यो तथ

3 प्रतिवेदनों का सहारा लेते है।

4ए ऐतिहासिक अनुसंधान के साक्ष्यों पुस्तकालयों संग्रहालयोंए प्राचीन ऐहिासिक स्थलोंए विशिष्ट

व्यक्तियों तथा पुरातत्वीय कार्यों आदि से प्राप्त होते है ।

ऐतिहासिक अनुसंधान के उद्देश्य :-

1ए ऐतिहासिक अनुसंधान का प्रमुख उद्देश्य अतीत की घटनाओं का वैज्ञानिक रूप में अध्ययन

करना है ।

2ए ऐतिहासिक अनुसंधान अतीत के अध्ययन से वर्तमान का अध्ययन तथा भविष्य के लिए

पूर्वकथन करना है।

3ए ऐतिहासिक अनुसंधान के अनुसंधान के द्वारा अतीत की कमजोरियों तथा अच्छाइयों का अध्यन करके उन्हें वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में अपनाता है।

4ए ऐतिहासिक अनुसंधान के द्वारा अतीत की कमजोरियों तथा अच्छाइयों का अध्यन करके उन्हें वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में अपनाता है।

5ए ऐतिहासिक अनुसंधान का उद्देश्य हमारे गौरवमयी अतीत का ज्ञान कराकर हमें आत्मगौरव प्रदान करना है।

6ए ऐतिहासिक अनुसंधान का उद्देश्य हमारे गौरवमयी अतीत का ज्ञान कराकर हमें आत्मगौरव प्रदान करना है।

7ए ऐतिहासिक अनुसंधान का उद्देश्य उन छोटी.मोटी बातो की ओर ध्यान आकर्षित करना है जिनके भयंकर तथा विनाशकारी परिणा निकले। ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए समान्यतः नीचे लिखे दो उपागम काम में लिये जाते है।

सूर्यदर्शी उपागम :

इस उपागम में शोधकर्ता अंत से प्रारम्भ करके वर्तमान की ओर अग्रसर होता है

प्रत्यक्षदर्शी उपागमः

इसमें इतिहास का अध्यन वर्तमान से प्रारम्भ कर अतीत में उनके का तलाशते है. ऐतिहकीस अनुशन्धान का यह नविन उपागम है

। इसमें इतिहास का अध्यन वर्तमा

से प्रारंभ कर अतीत में उनके का

तत्वमते है। ऐतिहासिक अनुसन्धान

का यह नवीन उपागम है।

ऐतिहासिक अनुसंधसान को निम्न चरणों में पूरा किया जा सकता है–

1ण समस्या का चयन परिकल्पनाओ का निमार्ण प्रदत संकलन प्रदतो की आलोचना ऐतिहासिक प्रतिवदेन

समस्या का चयन :– कोई भी व्यक्ति जो ऐतिहासिक अनुसंधान करना चाहता है उसका सबसे पहला कार्य है समस्या का चयन करना। शोधकर्ता अपने पूर्वानुभव, ज्ञान तथा योग्यता एवं अध्यन के आधार पर किसी व्यक्ति संस्था समाज या राष्ट्र के इतिहास या इतिहास के किसी पक्ष या धरना से सबंधित किसी समस्या का चयन करसकता है वह समस्या का चयन इस प्रकार करे जो अतीत के

1 संबंध में नया ज्ञान दे सके अतीत के संदर्भ में वर्तमान के प्रति नया दृष्टिकोण विकसित कर सके ।

इतिहास का क्षेत्र अत्यंत विशाल है । इसलिए शोधकर्ता को अपनी अपनी समस्या का परिसीमन भी इसी स्तर पर करना चाहिए ताकि समय, धन व श्रम की बचत की जा सके।

1द्ध इतिहास क्या . इर्ष्या कैर

2द्ध इतिहास . लेखन व्यारणाएँ तथा पद्धतियाँ . डॉण के एल खुराना तथा डॉण आर के बसंत

;3द्ध इतिहास दर्शन एवं इतिहास लेखन . पप्पू सिंह प्रजापत

4द्ध इतिहास दर्शन .डा० परमन्द्र सिंह